Subject :- Sociology Date :- 15/07/2020
Class :- D - III (H) Paper :- 7th
Topic :- बेरोजगारी के प्रकार
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
online study Material No :- (11A)

बेरोजगारी / बेकारी के प्रकार

बेरोजगारी के निम्नलिखित प्रकार है :-

1. मौसमी तथा आकस्मिक बेरोजगारी (Seasonal or casual Unemployment) → अनेक व्यवसाय ऐसे है जिनमें वर्ष में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी उनमें श्रमिकों अधिक आवश्यकता होती है तो कभी बिल्कुल आवश्यकता नही रहती। उदाहरण के लिए, चीनी उद्योग नवम्बर से मई तक चलता है, ऊन उद्योग सर्दियों में एवं बर्फ के कारखाने गर्मियों में ही चलते है। कृषि में भी फसल काटने के समय अधिक मजदूरों की आवश्यकता होती है। शादियों एवं त्योहारों के अवसर पर जेवर उद्योग भी अच्छा चलता है जबकि शेष दिनों में इस क्षेत्र में अधिक कार्य नही होता। इस प्रकार की बेकारी मजदूरों में गतिशीलता उत्पन्न कर देती है और वे रोजगार की तलाश में शहरों एवं औद्योगिक केन्द्रों की ओर जाते हैं। इसे रोकने के लिए उन्हे रिक्त समय में भत्ता दिया जाना चाहिए।
2. प्रौद्योगिक बेरोजगारी (Technological Unemployment) → उद्योगों में मशीनीकरण एवं नवीन अविष्कारों के फलस्वरूप मानव शक्ति का प्रयोग घटा है। अनेक उत्पादन के कार्य स्वचालित यंत्रों के द्वारा होने लगे हैं और उनमें लगे व्यक्तियों की संख्या दिनो-दिन कम होती जा रही है। परिणामस्वरूप बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। नाइलोन के प्रचलन ने जापान के रेशम उद्योग को तथा इटेलियन ऊन ने भेड़ के उद्योग में हलचल मचा दी। इस प्रकार मशीनीकरण, रोजगार और बेरोजगारी दोनों ही स्थितियों को जन्म देता है।
3. अस्थायी बेरोजगारी (Temporary Unemployment) → शिक्षा या प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद जब तक व्यक्ति को कोई कार्य नही मिलता कुछ समय तक वह बेकार रहता है, किन्तु ज्यों ही किसी व्यवसाय में काम मिल जाता है वह रोजगार-प्राप्त व्यक्तियों की श्रेणी में आ जाता है।
4. घर्षण बेरोजगारी (Friction Unemployment) → इस प्रकार की बेरोजगारी लोगों का रोजगार सम्बन्धी अवसरों की अनभिज्ञता, श्रमिकों में गतिशीलता का अभाव, मशीनों की टूट-फूट एवं उद्योगो में कच्चे

Scanned with CamScanner

माल की कमी आदि के कारणों से उत्पन्न होती है। इस प्रकार की बेरोजगारी विकशित देशों की मुख्य विशेषता है। विकास के कारण नये उद्योग खुलते हैं और कई पुराने उद्योग बन्द होते जाते हैं। पुराने व्यवसायों में लगे श्रमिक नये व्यवसायों को सीखने व प्रशिक्षण पाने तक बेरोजगार रहते हैं। इस प्रकार यह बेरोजगारी विकास का परिणाम है।

5. चक्रिय बेरोजगारी (Cyclical Unemployment) → व्यापार में उतार-चढाव के चक्र आते रहते है। जब किसी व्यवसाय में लाभ में अवसर अधिक होते हैं तो सभी लोग उसे अपनाने लगते हैं किन्तु कुछ समय बाद लाभ की मात्रा कम होने पर उसको छोड़ने लगते हैं। इस प्रकार पहले अर्थव्यवस्था का विकास होता है फिर संकुचन। जब एक व्यवसाय में मन्दी आती है तो दूसरा व्यवसाय अपनाया जा सकता है किन्तु सभी उद्योगों में या देशव्यापी मन्दी आती है तो लोगों को भयंकर बेरोजगारी एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6. अर्द्ध-बेरोजगारी (Under Employment) → जब व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार काम नही मिलता हो, जैसे डॉक्टर को कम्पाउण्डर के पद पर और एक इंजीनियर को ओवरसीयर के पद पर कार्य करना पड़े और वेतन भी कम प्राप्त हो तो उसे अर्द्ध-बेरोजगारी की श्रेणी के अन्तर्गत सम्मिलित करेंगे। इसी प्रकार से आंशिक रूप से रोजगार प्राप्त (Part-time employed) व्यक्ति भी अर्द्ध-बेरोजगार कहलायेंगे।

7. ऐच्छिक बेरोजगारी (Voluntary Unemployment) → जब व्यक्ति काम करने की क्षमता रखते हुए भी आलस्य, कम मजदूरी या मजदूरी में कटौती होने आदि के कारण काम नही करता है तो उसे ऐच्छिक बेरोजगारी माना जाएगा।

8. खुली बेरोजगारी (Open Unemployment) → इस प्रकार की बेरोजगारी में श्रमिकों के पास कोई काम नही होता है। इस प्रकार की बेरोजगारी अधिकतर शहरों में देखने को मिलती है जहाँ गाँव से आने वाले लोग काम के अभाव में बेरोजगार पड़े रहते है। इस श्रेणी में शिक्षित बेरोजगारी को भी सम्मिलित किया जाता है।

9. शिक्षित बेरोजगारी (Educated Unemployment) → शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी जब लोग बेरोजगार हों तो उन्हे इस श्रेणी में रखेंगे। भारत में एम० ए०, बी० ए०, डॉक्टरी, इंजीनियरिंग और अन्य तकनीकी शिक्षा प्राप्त कई व्यक्ति बेरोजगार हैं।

10. छुपी बेरोजगारी (Disguised Unemployment) → कृषक परिवार भूमि

Scanned with CamScanner

के छोटे-छोटे टुकड़ों पर कृषि करते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली के कारण भूमि पर दबाव बढ़ता जाता है। साथ ही नये जन्म लेने वाले सदस्य भी पहले वाले सदस्यों के साथ उसी भूमि पर काम करने लगते हैं। प्रकट रूप में तो ऐसा लगता है कि सभी रोजगार में लगे हुये हैं किन्तु उनके द्वारा उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं होती है। यदि उनमें से कुछ को कृषि कार्य से हटाकर दूसरे व्यवसाय में लगा दिया जाय तो भी कृषि उत्पादन में कोई कमी नही आयेगी। इस प्रकार से अप्रकट रूप से बेरोजगार ही थे।

11. संरक्षणात्मक बेरोजगारी (Structural Unemployment) → भारत से विदेशों में निर्यात किये जाने वाली वस्तुओं के व्यवसाय में यदि लम्बे समय तक कमी आ जाती है या निर्यात की माँग घट जाती है, तो उन व्यवसायों में बेरोजगारी उत्पन्न हो जाएगी। इस प्रकार की बेरोजगारी को संरक्षणात्मक बेरोजगारी कहा जाता है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U